Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara

B.A. Part – II (Hons)
Paper – IV
पाश्चात्य दर्शन का इतिहास
(Western Philosophy)

GRB
BOOKS

1

"Spinoza's Mind Body relation"

Notes!

(स्पिनोजा : शरीर और मन का सम्बन्ध)

स्पिनोजा भी देकार्त की तरह एक बुद्धिवादी दार्शनिक थे। उनके दर्शन का आधार देकार्त के कुछ मूल विचार हैं जिनको स्पिनोजा ने सुधारा, संवारा, बढ़ाया और अपनाया। द्रव्य, गुण और पर्याय ये तीन स्पिनोजा के दर्शन के आधार स्तम्भ हैं।

स्पिनोजा के दर्शन में देकार्त का द्वैतवाद अद्वैतवाद में ईश्वरवाद सर्वेश्वरवाद में और क्रिया-प्रतिक्रियावाद समानान्तरवाद में परिणत हो जाता है।

स्पिनोजा ने शरीर और मन के सम्बन्ध की व्याख्या देकार्त के शरीर और मन के सम्बन्ध की व्याख्या को संशोधित कर के दी है।

देकार्त ने माना था कि द्रव्य दो प्रकार के होते हैं — (1) मुख्य द्रव्य और (2) गौण द्रव्य। स्पिनोजा ने पहले द्वैत को असंगत कहकर नकार दिया और दूसरे द्वैत को संशोधित रूप में स्वीकार किया। संशोधन यह किया कि इस द्वैत को द्रव्य के स्तर से उतार कर गुण के स्तर पर रख दिया। स्पिनोजा ने बताया कि जब देकार्त द्रव्य को स्वतन्त्र सत्ताशील मानते

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

Notes
GRB BOOKS

है तब चित और अचित दोनों ईश्वर परतन्त्र हैं। उनकी अपनी स्वतन्त्र सत्ता नहीं है। अतः वे द्रव्य नहीं हैं। एकमात्र ईश्वर द्रव्य कहे जाने के पात्र हैं, क्योंकि केवल उन्हीं की स्वतन्त्र सत्ता है।

ईश्वर के अनन्त गुण हैं किन्तु मानव के दो ही गुणों को जानता है जो उसमें भी विद्यमान हैं। ये दो गुण हैं — चैतन्य और विस्तार। चैतन्य मन का गुण है और विस्तार शरीर का गुण है। ईश्वर द्रव्य है, ये उनके गुण हैं। एक ही ईश्वर के दो गुण होने के कारण इनको परस्पर विरुद्ध नहीं माना जा सकता। देकार्त ने इनको दो परस्पर निरपेक्ष द्रव्य मानकर द्वैतवाद की जो भयंकर भूल की थी, उसे स्पिनोजा ने मिटा दिया।

शरीर और मन जड़ या चेतन एक ही द्रव्य के गुण होने से दोनों के पारस्परिक संयोग या क्रिया - प्रतिक्रिया की आवश्यकता नहीं है। इनमें कार्य - कारण सम्बन्ध नहीं है, पारस्परिक संगति मात्र है। निमित्तवादियों ने देह और आत्मा को निमित्त मात्र मानकर ईश्वर को ही शक्त कारण माना था। स्पिनोजा ने बताया कि देह और आत्मा स्वतन्त्र द्रव्य तो हैं नहीं वे ईश्वर के विस्तार और चैतन्य नामक गुण हैं। जो दो समानान्तर धाराओं

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes /

के रूप में बद्ध रहे हैं। इनको संयोग या क्रिया प्रतिक्रिया मानने की आवश्यकता नहीं। इसप्रकार देकार्त का क्रिया प्रतिक्रियावाद स्पिनोजा में समानान्तरवाद में बदल गया।

इसप्रकार शरीर और मन के सम्बन्ध के बारे में स्पिनोजा के यही विचार हैं।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS